

By :Akhilesh Kumar (G. T Assit. Professor)

J. K college Biraul Darbhanga

YouTube :A Commerce Education

Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAU, DARBHANGA

FOR-LNMU -B.com part – 1 Subsidiary Paper- 2

Business management and communication

Unit- iv Communication



Easy to understand the concept

(INTER -DEPENDENCE OF SELF-DEVELOPMENT AND COMMUNICATION) स्व-विकास व संचार की पारस्परिक निर्भरता

स्व-विकास तथा संचार प्रक्रिया परस्पर एक दुसरे पर निर्भर होते हैं | स्व-विकास जहां एक तरफ संचार को अधिक गतिशील एवं प्रभावी बनाता है भी दूसरी तरफ प्रभावी संचार स्व-विकास में स्थायी वृद्धि करता है इस प्रकार स्व-विकास के द्वारा संचार को प्रभावशाली बनाने में सहायता मिलती है तथा प्रभावपूर्ण संचार के माध्यम से स्व विकास सम्भव हो पाता है | स्व-विकास व संप्रेषण की पारस्परिक निर्भरता को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है -

(IMPROVEMENT IN COMMUNICATION THROUGH SELF-DEVELOPMENT)स्व-विकास द्वारा संचार में सुधार

स्व-विकास, संचार कुशलता में सुधार करके उसे अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है | स्व-विकास व संचार के

मध्य सम्बन्ध की निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है -

- (1) स्व-विकास द्वारा संचार कुशलता में सुधार - स्व-विकास के द्वारा संचार कुशलता में सुधार लाकर उसे अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। विभिन्न संचार कुशलताओं जैसे लिखना, बोलना, सुनना तथा शारीरिक भाषा में स्व-विकास के द्वारा सुधार लाया जा सकता है। स्व-विकास व्यक्ति को अधिक योग्य, शिक्षित व शारीरिक रूप से सक्षम बनाता है। बौद्धिक विकास से व्यक्ति की लेखन शैली अधिक रचनात्मक व उपयोगी बन जाती है।
- (2) स्व-विकास द्वारा वृहद द्रष्टिकोण का विकास - स्व-विकास व्यक्ति के द्रष्टिकोण को वृहद स्वरूप प्रदान करता है। इससे व्यक्ति की विभिन्न प्रकार के संचार को समझने में व्यक्तियों की शीघ्रता से जाँच परख कर सकता है।

(3) स्व-विकास द्वारा विश्लेषण शक्ति का विकास - आत्म-

विकास विश्लेषण शक्ति को बढ़ाने में सहायक होता है ।
आत्म-विकसित व्यक्ति जटिल या कठिन स्थितियों में भी
सम्बंधित समस्याओं का हल ढूँढने में सक्षम होता है । वह
समस्याओं के अनुरूप वाद-संवाद करने में सक्षम होता है व
श्रोताओं का विश्लेषण भी कर सकता है । अतः उक्त गुणों
के चलते वह एक संचार प्रक्रिया में अपना योगदान अत्यन्त
ही प्रभावी ढंग से दे सकता है ।

(4) स्व-विकास द्वारा आलोचनात्मक शैली का विकास - स्व-

विकास व्यक्ति में आलोचनात्मक शैली का विकास करता है
। स्व-विकास के द्वारा उसमें संचार नियोजन, संशोधन व
सम्पादन करने की क्षमता विकसित होती है । स्व-विकसित
होती है । वह संवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण करके
अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने में भी सक्षम होता है ।

- (5) स्व-विकास द्वारा अन्य, क्षमताओं का विकास - स्व-विकास
के द्वारा व्यक्ति में कुछ अन्य क्षमताओं जैसे पूर्णता,
स्पष्टता, सूक्ष्मता, चैतन्यता आदि का भी विकास होता है ।

**(IMPROVEMENT IN SELF-DEVELOPMENT
THROUGH COMMUNICATION) सम्प्रेषण द्वारा स्व-
विकास में सुधार :-**

जिस प्रकार स्व-विकास के द्वारा संचार में कुशलता में सुधार करके उसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है । उसी प्रकार के प्रभावशाली संचार के द्वारा स्व-विकास में भी वृद्धि की जा सकती है एक प्रभावशाली संचार आत्म-विकास का महत्वपूर्ण उपकरण है । संचार के मुख्य माध्यम जैसे मौखिक व अभाषिक आत्म-विकास को बढ़ाते हैं । भाषा-प्रवाह, प्रभावशाली लेखन, शारीरिक भाषा व श्रवण शक्ति आदि ऐसे तत्व हैं जो आत्म-विकास को बढ़ाते हैं । अंतः प्रभावी व्यावसायिक संचार आत्म-विकास में निम्न रूप से सुधार कर सकता है -

- (1) **शारीरिक भाषा द्वारा स्व-विकास - शारीरिक भाषा के विभिन्न स्वरूप जैसे, भाव-भंगिमा, मुद्रा या आसन आदि आत्म-विकास में वृद्धि करते हैं । शारीरिक भाषा के**

निरन्तर प्रयोग व समझ से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का विकास होता है ।

(2) मौखिक संचार द्वारा स्व-विकास - मौखिक संचार के विभिन्न स्वरूप जैसे सावर्जनिक भाषण, वाद-विवाद स्व-विकास में वृद्धि के महत्वपूर्ण साधन हैं ।

डेलकाननेगी के अनुसार, "प्रगति के लिए बुद्धिमानी से अधिक आवश्यक भाषा एवं विचार प्रवाह है"। यदि एक वक्ता अपने विषय पर ग्रहण चिन्तन क्र व्यक्तित्व में तर्कों तथा तथ्यों को सम्मिलित करते हुए भाषण देता है तो वह अधिक प्रभावशाली होता है ।

(2) लिखित सम्प्रेषण व आत्म-विकास - किसी भी प्रकार के लेखन का प्रारम्भ एक विचार से होता है । एक विचार की उत्पत्ति मानव मस्तिष्क में होती है । लेखन ही व्यक्ति की रचनात्मक व कल्पनाशीलता में वृद्धि करता है । ये बातें ही आत्म-विकास को बढ़ाती हैं ।

(4) श्रवण क्षमता व आत्म-विकास - श्रवणता प्रभावशाली सम्प्रेषण का एक विशिष्ट अंग है । एक सफल व्यवसायी अपने

By :Akhilesh Kumar (G. T Assit. Professor)

J. K college Biraul Darbhanga

YouTube :A Commerce Education

ग्राहकों को बात को ध्यानपूर्वक सुनता है तथा उनके द्वारा दिए गए उपयोगी सुझावों को अपनाता है इससे उसके स्व-विकास में सुधार होता है ।

(MEANING OF ATTITUDES) द्रष्टिकोण से आशय

द्रष्टिकोण से अभिप्राय किसी एक व्यक्ति, समूह, वस्तु या विचार के विश्लेषण करके की एक मान मानसिक प्रक्रिया से है । द्रष्टिकोण का एक व्यक्ति की पसन्द तथा नापसन्द एवं उसके व्यवहार के ऊपर अत्यन्त प्रबल प्रभाव होता है अर्थात् द्रष्टिकोण एक भागवत घटना है ।

“मोरगन म आइसिंग के अनुसार” - द्रष्टिकोण किसी व्यक्ति, वस्तु तथा परिस्थिति के लिए सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति है । इसमें मुख्यतः तीन तत्व होते हैं - ज्ञान, भावना एवं कार्य ।”

“ सेकण्ड एवं बैकमेन के अनुसार, - “वातावरण के कुछ पहलुओं के प्रति व्यक्ति के भावों/विचारों व अनुक्रिया करने की पूर्व प्रवृत्तियों को मनोवृत्ति खा जाता है ।”

By :Akhilesh Kumar (G. T Assit. Professor)

J. K college Biraul Darbhanga

YouTube :A Commerce Education

बोगार्ड्स के अनुसार, “यह एक कार्य करने की प्रवृत्ति है जो की कुछ वातावरणीय तत्वों के पक्ष में या विपक्ष में होती है जिसके फलस्वरूप यह एक सकारात्मक अथवा नकारात्मक मूल्य अपना लेती है ।”

(MEANING OF POSITIVE ATTITUDES)सकारात्मक

द्रष्टिकोण से आशय: किसी विषय, वस्तु या व्यक्ति के प्रति हमारा द्रष्टिकोण सकारात्मक, नकारात्मक एवं तटस्थ हो सकता है ।

- ✓ सकारात्मक द्रष्टिकोण से आशय किसी विषय या तथ्य के सम्बन्ध में अनुकूल विश्लेषण से है अर्थात किसी विषय के लिए पसन्द एवं अनुकूल व्यवहार की उत्पत्ति का होना सकारात्मक द्रष्टिकोण प्रदर्शित करता है ।
- ✓ सकारात्मक द्रष्टिकोण या मनोवृत्ति की उत्पत्ति प्रेरणा के माध्यम से होती है । द्रढ इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास, कर्तव्य के प्रति समप्रण, रचनात्मक कार्य एवं विचारों के प्रति निष्ठा, सकारात्मक द्रष्टिकोण के परिचायक होते हैं ।
- ✓ सकारात्मक द्रष्टिकोण वाला व्यक्ति कठिनाइयों समस्याओं का सरलतापूर्वक सामना करते हुए अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होता है ।
- ✓ सकारात्मक द्रष्टिकोण, व्यक्ति को अनावश्यक चिन्ताओं से मुक्ति प्रदान करता है । सकारात्मक द्रष्टिकोण को आशावादी या स्वस्थ द्रष्टिकोण भी कहते हैं ।

By :Akhilesh Kumar (G. T Assit. Professor)

J. K college Biraul Darbhanga

YouTube :A Commerce Education

सकारात्मक द्रष्टिकोण होना प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की सफलता का प्रथम सोपान है | अतः एक व्यवसायी को स्वयं के व्यवसाय को सुचारु रूप से चलाने के लिए सकारात्मक द्रष्टिकोण अर्थात आशावादी मनोवृत्ति का होना अत्यन्त आवश्यक होता है |